मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 81, मार्च(द्वितीय), 2020

श्री ज्ञानप्रकाश 'पीयूष 'जी के दोहा संग्रह 'पीयूष सतसई 'की समीक्षा

समीक्षक : राजपाल सिंह गुलिया

बहुमुखी प्रतिभा के धनी , समर्पित आलोचक , शिक्षाविद एवं उच्चकोटि के समीक्षक व प्रमुख साहित्यकार आदरणीय श्री ज्ञानप्रकाश 'पीयूष 'की सद्य प्रकाशित कृति है - पीयूष सतसई ! राजस्थान शिक्षा विभाग के प्रिंसिपल पद से सेवानिवृत्त श्री ज्ञानप्रकाश 'पीयूष 'जी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं ! 700 दोहों की इस कृति में दोहाकार ने अपने दायित्वों का बड़ी सजगता , निष्ठा व समर्पण भाव से निर्वहन किया है ! पुस्तक के आत्मकथ्य में पीयूष जी लिखते हैं नागरिकों को राष्ट्र की समस्याओं के प्रति जागरूक व निराकरण हेतु उत्प्रेरित करना साहित्यिक धर्म है तथा दायित्व भी।

'पीयूष सतसई 'पढ़ते समय लगता है कि दोहाकार अपने इस दायित्व को निभाने में सफल भी रहा है!

दोहा सृजन साहित्य की एक सशक्त विधा है ! दोहा लय गेयता से सजा एक मात्रिक छंद है, जिसमें पीयूष जी को महारत हासिल है !

बानगी देखिए :-

कविता धारा प्रेम की , सबको रखती जोड़ !
भाव शुद्ध मन का करे , अहंकार को तोड़ !!

अमीर गरीब के बीच गहरी खाई को देखकर दोहाकार समाज से कुछ यूँ पूछ बैठता है !

निर्धन भूखा भाव का , सबसे करता प्रीत !
जग नफरत से देखता , कैसी है ये रीत !!

धनिकों को चेताता उनका ये दोहा कुछ यूँ बन पड़ा !

जो कुछ तेरे पास है , मत कर उस पर गर्व !
वंचित जन की मदद कर , कष्ट मिटेंगे सर्व !!

सतसई के दोहों में समकालीन परिदृश्य को देखें तो बाजारवाद , भ्रष्टाचार , शोषण , बेरोजगारी , घोटाले , जातिवाद , देशप्रेम तथा प्रदूषण आदि प्रमुख तथ्य हैं जिनपर दोहाकार ने अद्भुत दोहे गढ़े हैं !

जिस रज में पैदा हुए , है उस पर अभिमान !
तिलक लगाएं शीश पर , गाएँ गौरव गान !!

पीयूष सतसई के दोहे वर्तमान दौर के सच को सामने रखते हुए आधुनिक दोहों का सटीक प्रतिनिधित्व करते प्रतीत होते हैं ! कुछ दोहों में दोहाकार ने ऐसे गंभीर प्रश्न भी छोड़े हैं , जिन पर गंभीरता से चिंतन करने की आवश्यकता है ! भाषा की सरलता व सहजता दोहों को सरस बनाती है ! साहित्य जगत में ज्ञानप्रकाश ' पीयूष ' की कृति का स्वागत होगा , ऐसा मेरा विश्वास है !

पुस्तक : पीयूष सतसई
दोहाकार : ज्ञान प्रकाश ' पीयूष '
वर्ष : 2020
प्रकाशक : बोधि प्रकाशन , जयपुर (राजस्थान)
मूल्य : ₹150/-

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें